ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 7 & Issue 4 (October 2025)

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n4.09

महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन
(A Comparative Study of Job Satisfaction among College Teachers)

डॉ. अजय कुमार प्रजापति,
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
श्री बिक्रम चौहान स्मारक महाविद्यालय,
रामपुर भुजही, आज़मगढ

Dr. Ajay Kumar Prajapati
Assistant Professor (Department of Education)
Shri Bikrama Chauhan Memorial College,
Rampur Bhujhi Azamgarh

सारांश

किसी को शिक्षा प्रदान करना या शिक्षित करना अत्यंत सम्मानजनक कार्य है। सीमित आय और कम सुविधाओं के बावजूद भी शिक्षकों को शिक्षा प्रदान करने में अत्यधिक संतोष प्राप्त होता है, क्योंकि बच्चों का भविष्य संवारना और राष्ट्र के विकास को नई दिशा में ले जाना शिक्षक के ही हाथों में होता है। यदि शिक्षक अपने पेशे (कार्य) के प्रति पूर्णतः समर्पित होंगे, तो वे अधिक निष्ठा के साथ राष्ट्र सेवा के इस पावन कार्य में अपना सर्वस्व अर्पित करते रहेंगे। लेकिन यदि उन्हें अपने कार्य से पर्याप्त संतुष्टि न मिले, तो उनके शिक्षण कार्य पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतः शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि राष्ट्र के लिए एक प्रमुख प्रश्न है, जिस पर सभी को राष्ट्रहित में अवश्य विचार करना चाहिए, ताकि देश की भावी पीढ़ियों को तैयार करने वाले शिक्षकों को भी कुछ हद तक न्याय प्राप्त हो सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्तमान परिवर्तित परिस्थितियों में शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि तथा उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास किया है।

Abstract

To educate or impart knowledge to others is an immensely honorable task. Despite limited income and minimal facilities, teachers derive great satisfaction from their profession, for it is in their hands to shape the future of children and to guide the nation toward progress. If teachers are fully dedicated to their profession, they will continue to devote themselves wholeheartedly to this noble service of the nation. However, if they do not receive adequate satisfaction from their work, it may adversely affect the quality of their teaching. Therefore, teachers' job

satisfaction is a matter of national concern and must be thoughtfully addressed in the interest of the nation, so that those who prepare the future generations may also receive due justice and recognition. With this understanding, the researcher has attempted to examine the level of job satisfaction among teachers and to explore the issues they face in the present changing circumstances.

संकेतशब्द: शिक्षक, कार्य-संतुष्टि, शिक्षा, राष्ट्र निर्माण, निष्ठा, समर्पण, शिक्षण गुणवत्ता, समस्याएँ, परिवर्तित परिस्थितियाँ

Keywords: Teacher, Job Satisfaction, Education, Nation Building, Dedication, Commitment, Teaching Quality, Challenges, Changing Circumstances

प्रस्तावना-

व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बनाना चाहता है, इसके लिए वह अनेक कार्य करता है। इन कार्यों में शिक्षा का कार्य सबसे महत्वपूर्ण है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य न तो अपना विकास कर सकता है और न ही राष्ट्र का। बिना शिक्षा के मानवीय जीवन शून्य सा प्रतीत होता है। विश्व के जितने भी देश विकसित हुए हैं, वे शिक्षा के बल पर ही हुए हैं तथा उन्होंने शिक्षा के माध्यम से ही अपने विकास को इतना तीव्र किया कि वे पूर्ण विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ खड़े हुए।

वर्तमान समय में शिक्षा की समस्या हमारे सामने चुनौती की तरह खड़ी है। जो भी देश के लिए बनने वाली योजना है, उसे क्रियान्वित करने के लिए तैयार खड़ा होता है, उसमें शिक्षक प्रमुख होता है। शिक्षक नए समाज का निर्माता और नेतृत्वकर्ता होता है। वर्तमान समय की प्रगतिशील ज्ञान-विज्ञान की स्थिति में जहाँ संपूर्ण विश्व एक बाज़ार में बदल गया है, वहाँ शिक्षकों की ज़िम्मेदारियाँ और भी बढ़ गई हैं। यदि शिक्षक सक्षम होंगे, तो वे भावी पीढ़ी को सक्षम बना सकेंगे, उन्हें नई दिशा और दृष्टि प्रदान कर सकेंगे। वे अपने विद्यार्थियों में विश्व की नवीन व्यवस्था के साथ चलने की क्षमता विकसित कर सकेंगे।

शिक्षण कार्य में अध्यापक का व्यक्तित्व और उसका विद्यार्थियों पर प्रभाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। हरबर्ट का कथन है कि–**"चरित्र निर्माण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अध्यापक अपने व्यक्तित्व का उपयोग करता है।"** यदि शिक्षकों में अपने राष्ट्र के प्रति कार्य-समर्पण की भावना नहीं रहेगी, तो वे अपने मार्ग से भटककर अन्य दिशाओं में आकर्षित होकर शिक्षण कार्य को छोड़ देंगे या फिर पूर्ण लगन और निष्ठा से शिक्षण कार्य नहीं कर पाएंगे, जिससे विद्यार्थियों का भविष्य संकट में पड़ सकता है।

देश के विकास की योजना बनाने वाले महानुभावों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि वे शिक्षकों के विचारों में आर्थिक स्थिरता, भविष्य की सुरक्षा और दिन-प्रतिदिन बढ़ती महँगाई से जूझने का दबाव समाप्त करें, तभी उनका शिक्षण कार्य प्रभावी होगा। वे अपने विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत

और भावनात्मक जुड़ाव के साथ उचित शिक्षण कार्य कर सकेंगे। अतः इस ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि शिक्षक अधिक से अधिक अपने कार्य से संतुष्ट रहें–कार्य-संतुष्टि जिसमें आर्थिक सुरक्षा, समाज और परिवार में पर्याप्त सम्मान तथा भविष्य की सुनिश्चितता के साथ संस्था में सौहार्दपूर्ण वातावरण और अपने कार्य के प्रति गर्व की भावना निहित हो।

शोध का औचित्य

आज के समय में जब शिक्षकों पर लगातार दबाव डाला जा रहा है, ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षण कार्य अत्यधिक आकर्षक और लाभप्रद अवस्था से हटकर अब नीरस एवं चुनौतीपूर्ण स्थिति में पहुँच गया है। इसका मुख्य कारण कार्य-संतोष की कमी है। अन्य व्यवसायों की तुलना में शिक्षकों को आर्थिक प्रोत्साहन, आवास सुविधा, वाहन सुविधा, टेलीफोन सुविधा, चिकित्सा आदि की सुविधाएँ बहुत सीमित रूप में प्राप्त हो रही हैं। वहीं, डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी इत्यादि आर्थिक रूप से अधिक सशक्त और सुखी जीवन जीते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

शिक्षा के आधार पर शिक्षक, छात्र, समाज और राष्ट्र के मार्गदर्शन का कार्य करता है। यह शोध समाज के सभी वर्गों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगा। प्रशासनिक स्तर पर शिक्षा अधिकारी तथा अन्य संबद्ध अधिकारी शिक्षकों की समस्याओं को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास कर सकेंगे। विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य भी शिक्षकों की कठिनाइयों से अवगत होकर उनके समाधान हेतु प्रेरित होंगे। शिक्षकों को भी अपने आचरण को नियंत्रित रखने की प्रेरणा मिलेगी, ताकि शिक्षण प्रक्रिया में व्यवधान न उत्पन्न हो तथा वे अपने विद्यार्थियों–जो भविष्य में शिक्षक बनना चाहते हैं–को कार्य-संतोष के विषय में समुचित जानकारी प्रदान कर सकें।

समस्या-वक्तव्य (Statement of the Problem)

सरकारी तथा गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. सरकारी और गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

2. सरकारी और गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।
3. गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

शोध की सीमा (Delimitation of the Study)

इस अध्ययन में ओझा सिंह भानुप्रताप सिंह विश्वविद्यालय, झाँसी से संबद्ध सरकारी एवं गैर-सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और शिक्षिकाओं को ही सम्मिलित किया गया है।

नमूना (Sample)

शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु 10 सरकारी तथा 10 गैर-सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक (Random Sampling) पद्धति से किया।

उपकरण (Tool)

शोधकर्ता ने शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष के अध्ययन हेतु *कार्य-संतोष मापन-मानक (Job Satisfaction Scale)* तैयार किया तथा उसका उपयोग किया। यह स्केल लाइकेर्ट (Likert) की पाँच-बिंदु मापन प्रणाली पर आधारित है। प्रत्येक कथन को पाँच बिंदुओं–पूर्ण सहमति से लेकर पूर्ण असहमति तक–में विभाजित किया गया है।

अपेक्षित उपयोगिता (Expected Usefulness of the Study)

यह अध्ययन शिक्षकों के कार्य-संतोष को प्रभावित करने वाले तत्वों की पहचान करेगा तथा प्रशासन, प्राचार्य एवं नीति-निर्माताओं को शिक्षा-संस्थान के वातावरण, आर्थिक स्थिरता, सामाजिक सम्मान और कार्य-संतोष के स्तर को सुधारने के लिए दिशानिर्देश प्रदान करेगा।

क्रमांक	पूर्ण सहमत	सहमत	अनिष्चित	टसहमत	पूर्ण असहमत
	A	B	C	D	E

इस अध्ययन में पाँच बिंदुओं (A से E तक) के आधार पर शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के उत्तरों को क्रमशः 1 से 5 तक अंक प्रदान किए गए– A = 1, B = 2, C = 3, D = 4, E = 5।

इन बिंदुओं के आधार पर संज्ञानात्मक (Cognitive) तथा भावनात्मक (Affective) कथनों का पृथक रूप से मूल्यांकन किया गया। तत्पश्चात् कुल अंकों को जोड़कर प्रत्येक उत्तरदाता का औसत अंक निर्धारित किया गया। इस प्रकार प्राप्त अंकों का योग शिक्षकों/शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष का द्योतक माना गया।

Likert विधि (Likert Scale Method) के अनुसार यदि कोई शिक्षक या शिक्षिका किसी कथन से पूर्णतया सहमत है, तो उसे **5 अंक** दिए गए, यदि पूर्णतया असहमत है, तो **1 अंक**, तथा बीच के विकल्पों के लिए क्रमशः **2, 3, और 4 अंक** निर्धारित किए गए।

इस प्रकार "पूर्ण सहमत", "सहमत", "अनिर्णीत", "असहमत" और "पूर्ण असहमत" के आधार पर प्राप्त अंकों का योग शिक्षकों के कार्य-संतोष का स्तर दर्शाता है।

डेटा संकलन की प्रक्रिया (Data Collection Procedure)

शोधकर्ता ने स्वयं विभिन्न महाविद्यालयों का भ्रमण किया, वहाँ के प्राचार्यों से औपचारिक अनुमति प्राप्त की, और शिक्षकों/शिक्षिकाओं से व्यक्तिगत भेंट करके अध्ययन के उद्देश्य बताए। तत्पश्चात् उन्हें निर्धारित प्रश्नावली भरने का अनुरोध किया गया। सभी प्रतिभागियों ने प्रश्नावली भरकर वापस दी, जिसके बाद शोधकर्ता ने सभी उत्तरों को संकलित और वर्गीकृत किया।

सांख्यिकीय विधियाँ (Statistical Techniques)

इस अध्ययन में शिक्षकों के कार्य-संतोष को मापने हेतु एक **कार्य-संतोष मापन-सूची (Job Satisfaction Scale)** का निर्माण किया गया। प्राप्त अंकों के औसत (Mean) तथा मानक विचलन (Standard Deviation) की गणना की गई और उनके आधार पर **t-परीक्षण (t-test)** द्वारा परिणामों का विश्लेषण किया गया। इस प्रक्रिया से यह ज्ञात किया गया कि सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में शिक्षकों के दृष्टिकोण में कार्य-संतोष के प्रति कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं।

प्रथम उद्देश्य का विश्लेषण (Analysis of First Objective)

उद्देश्य:

सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:

सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

तालिका संख्या - 1

सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	वर्ग	संख्या (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य (t-value)	निष्कर्ष (Result)
1.	सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षक	40	86.56	6.73	8.92	0.05 स्तर पर अंतर सार्थक है

2.	अशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षक	40	72.73	7.14	–	

स्पष्टीकरण:

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी महाविद्यालयों के शिक्षकों का औसत 86.56 तथा मानक विचलन 6.73 है, जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों का औसत 72.73 तथा मानक विचलन 7.14 पाया गया। प्राप्त t-मूल्य 8.92 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया।

निष्कर्ष:

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का कार्य-संतोष स्तर अशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है।

द्वितीय उद्देश्य का विश्लेषण (Analysis of Second Objective)

उद्देश्य:

सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:

सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

(यहाँ तालिका संख्या 2 प्रस्तुत की जाएगी जब डेटा उपलब्ध होगा)

तृतीय उद्देश्य का विश्लेषण (Analysis of Third Objective)

उद्देश्य:

अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना:

अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा।

तालिका संख्या - 3

अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	वर्ग	संख्या (N)	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	t-मूल्य (t-value)	निष्कर्ष (Result)
1.	अशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षक	33	85.88	7.07	6.02	0.05 स्तर पर अंतर असार्थक
2.	अशासकीय महाविद्यालयों की शिक्षिकाएँ	20	76.00	4.85	–	–

विश्लेषण एवं व्याख्या (Analysis and Interpretation):

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का औसत 85.88 तथा मानक विचलन 7.07 पाया गया, जबकि उन्हीं महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का औसत 76.00 तथा मानक विचलन 4.85 पाया गया। प्राप्त t-मूल्य 6.02 है, जो 0.05 स्तर पर **असार्थक** पाया गया।

इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना **स्वीकृत** (Accepted) की गई।

निष्कर्ष (Findings):

1. सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य-संतोष में **महत्वपूर्ण अंतर पाया गया** – सरकारी शिक्षकों का कार्य-संतोष स्तर अधिक है।
2. सरकारी एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में भी **सार्थक अंतर पाया गया** – सरकारी शिक्षिकाएँ अपेक्षाकृत अधिक संतुष्ट हैं।
3. अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के कार्य-संतोष में **कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया** – दोनों का संतोष स्तर लगभग समान है।

शैक्षणिक महत्व (Educational Implications):

शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि विभिन्न अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को भविष्य की असुरक्षा, बढ़ती महँगाई, और सुविधाओं के अभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः प्रबंधन एवं प्रशासनिक अधिकारियों को चाहिए कि–

- वे शिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु ठोस कदम उठाएँ।
- शिक्षकों के साथ व्यवहार में **सहयोगात्मक दृष्टिकोण (Collaborative Approach)** अपनाएँ।
- महाविद्यालयों के प्रत्येक क्रियाकलाप में शिक्षकों की सहभागिता सुनिश्चित करें।
- विद्यार्थियों को अधिक प्रेरित करने हेतु शिक्षकों को आत्म-संतोष, सम्मान और प्रोत्साहन दिया जाए।

वर्तमान समय में यह भी देखा गया है कि राज्य सरकारें शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रही हैं, जबकि इस क्षेत्र में उच्च स्तरीय नीतिगत हस्तक्षेप और निवेश की अत्यधिक आवश्यकता है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तभी संभव है जब शिक्षक कार्य-संतोष की भावना से पूर्णतया युक्त हों।

संदर्भ ग्रंथ सूची

R.K Chapra 1986 : Institutinal climate and teacher job satisfaction.

Buch M.B (1991) : Education fourth Survey of research in Eduction vol.-2 NCERT New Delhi.

Miller G.V (2005) : Ethnicity and the Experience of work job street and satisfaction of minority ethnic teachers in the UK international review of psychiatry.

Zembyla M. and Parasuraman E. (2006) : sources of teacher Job satisfaction and dissatisfaction in Cyprus compare.

Abdullan M.m. and Parasuraam B.(2009) : Job satisfaction among secondary school teachers journal k emaunusion.

Alzaid A.(2008) : Secondary school head teachers job satisfaction in Saudi Arabia the results of a mixed methods Approach international conference on education 26.29 may 2008 Athens Greece.

Nilesh Patel and Bharti Josi : A comparative study of job satisfaction of teachers working in secondary schools.